श्री हनुमान चालीसा

©Heygreetings.in

©Heygreetings.in

॥ दोहा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु
सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल
चारि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवन-कुमार ।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार
॥

©Heygreetings.in

Read Online

©Heygreetings.in

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ानगुन सागर ।
जय कपीस तँ लोकउजागर ॥०१॥

राम त अतु लतबल धामा ।
अंजनी-पु पवनसुतनामा०२॥

महाबीर ब मबजरंगी ।
कुम त नवार सुम तके संगी ॥०३॥

कंचन बरन बराज सुबेसा
कानन कु डल कं ुं चत केसा०४॥

©Heygreetings.in

Read Online

©Heygreetings.in

हाथ ब और वजा बराजै ।
काँधेमँूँज जनेऊसाजै ॥०५॥

संकर सुवनकेसरी नंदन ।
तेज ताप महाजगब दन ॥०६॥

ब ावान गुनीअ त चातुर ।
राम काज क रबेकोआतुर०७॥॥

भु च र सु नबेको र सया ।
राम लखन सीतामनब सया०८॥॥

सू म प ध र सय ह दखावा ।
बकट प ध रलंकजरावा०९ ॥॥

©Heygreetings.in

Read Online

©Heygreetings.in

भीम प ध रअसुरसँहारे
रामच के काजसँवारे१॥० ॥

लाय संजीवनलखन जयाये
ीरघुबीर हर षउरलाये१॥१

रघुप त क हीब तबड़ाई
तुम मम य भरत हसमभाई१२॥ ॥

सहस बदन तु हरोजसगाव
अस क ह ीप तकंठलगाव १३॥ ॥

सनका दक हा द मुनीसा ।
नारद सारद स हतअहीसा१४॥॥

जम कुबेर दगपाल जहाँते।
क ब को बद क हसके कहाँ ते॥१५॥

Read Online

©Heygreetings.in

तुम उपकार सुग्रीव ह क हा ।
राम मलाय राज पद द हा१६॥

तु हरो मं बभीषन माना ।
लंके वर भए सब जग जाना ॥१७॥

जुग सह जोजन पर भानु ।
ली यो ता ह मधुर फल जानू१८॥

भु मु का मे ल मुख माह ।
जल ध लाँ घ गयेअचरज नाह ॥१९॥

गम काज जगत केजेते
सुगम अनु ह तु हरे तेते२०

राम आरे तुम रखवारे
होत न आ ा बनु पैसारे२१॥

©Heygreetings.in

Read Online

©Heygreetings.in

सब सुख लहैतु हारी सरना ।
तुम र क का को डर ना२२ ॥॥

आपन तेज स हारो आपै ।
तीन लोक हाँकत काँपै२३॥॥

भूत पसाच नकटन ह आवै ।
महाबीर जब नामसुनावै ॥२४ ॥

नासै रोग हरैसबपीरा ।
जपत नर तर हनुमतबीरा॥ २५॥

संकट त हनुमानछुडावे ।
मन म बचन यानजोलावै ॥२६॥

सब पर रामतप वीराजा ।
तन के काज सकलतुमसाजा ॥२७॥

©Heygreetings.in

Read Online

©Heygreetings.in

और मनोरथ जोकोई लावै।
सो ह अ मत जीवनफल पावै ॥२८॥

चारो जुग परतापतु हारा॥
हैपर स जगतउ जयारा२९॥

साधुस तकेतुम रखवारे ।
असुर नक दनराम लारे३०॥॥

अ स नौ नाधकेदाता
अस बर द न जानक माता३१ ॥

राम रसायनतु हरेपासा
सदा रहो रघुप तकेदासा३२।

तु हरे भजनरामकोपावै
जनम जनम के खा बसारावै३३

Read Online

©Heygreetings.in

अ त काल रघुबरपुरजाई
जहाँज म ह रभ कहाई३४ ॥

और देवता च नधरई
हनुमत सेही सब सुखकरई३५

संकट कटै। मटैसबपीरा
जो सु मरे हनुमतबलबीरा३६ ॥

जय जय जयहनुमानगोसा
कृपा कर गु देवक ना ३७ ॥

जो सत बारपाठकरकोई
छूट ह ब द महासुखहोई३८ ॥

जो यह पढ़ै हनुमानचालीसा
होय स साखीगौरीसा३९ ॥ ॥

तुलसीदास सदाह रचेरा
क जैनाथ दय महडेरा४० ॥

Read Online

©Heygreetings.in

॥ दोहा ॥

पवनतनय संकट हरन मंगल मु त प ।
राम लखन सीता स हत दय बस सुरभूप ॥

©Heygreetings.in

Read Online